International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 3; May 2017; Page No. 69-70

समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में नारी संघर्ष

डॉ0 मोहम्मद अलीखॉन

प्राध्यापक, विवेकानंदा महाविद्यालय, करीमनगर जिला, तेलंगाना, भारत।

प्रस्तावना

प्रकृति का सबसे सुन्दरतम उपहार है नारी। संसार में यदि नारी न होती, तो सभ्यता और संस्कृति ही नहीं होती। भारतीय मान्यताओं में नारी को देवी रूप माना गया है। मनुस्मृति में कहा गया है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः'' अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निकास करते हैं। पाशचत्य मान्यताओं में भी नारी को गौरवान्वित किया गया है। गेटे ने कहा है– ''दि एटरनल फेमिनिन डूरज अस अपवार्ड'' (अर्थात शाश्क्त् नारीत्व हमें सामान्य स्तर से उठाकर ऊँचाई की ओर ले जाता है) जहाँ एक ओर नारी को देवी रूप में देखा गया है। वहीं दूसरी ओर उसकी निन्दा कर उसे दानवी रूप में देख गया है। तुलसीदास की दृष्टि में नारी अति नीच और पशु के समान है– ''अधम से अधम अति नारी।'' और दोल गंवार शुद्र पसु नारी सकल ताड़ना के अधिकारी।''

पुरूष की तुलना में नारी अधिक मानवीय है फिर भी मानव संस्कृति के निर्माण में उसे अधिक महत्व नहीं मिला। अपने विविध रूपों में नारी ने पुरूष को संवर्धन, प्रोत्साहन और शक्ति दी है। बंगाल और महाराष्ट्र में समाज सुधारकों ने स्त्रियों के प्रति फैली बुराइयों पर आवाज उठाना शुरू किया। स्वतंत्रता प्रप्ति के बाद आधुनिकता–बोध के कारण पराम्परागत जीवन–मूल्यों के प्रति लोगों की आस्थायें टूटते लगी थी। बदली हुई सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के कारण आधुनिक जीवन दृष्टि से समग्र परिवर्तन हुआ इस परिवर्तित दृष्टि कोण को महिला लेखिकाओं ने रचना स्तर पर अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया। बद्रलते हुये सामाजिक जीवन और कदलते जीवन मूल्यों के कारण रचनात्मक अभिव्यक्ति का अनुभव जगत भी बदल गया धर्म सम्मत जाति व्यवस्था ने जातिवाद के रूप में असमानता, शोषण और धृणा का जाल फैलाया था और उसे करमवाद सिंद्धांत के रूप में दलितों और स्त्रिओं के दिमाग पर पूरी तरह फैला दिया था। स्त्री और अधिक मुखर होकर धीरे–धीरे अपने कदम आगे बढ़ाती हुई जीवन–राह में अग्रसर होने लगी। इसी क्रम में उसने अपनी लेखनी की धार को भी तेज किया। नारी समस्या तथा नारी जीवन की जटिलताओं को सामाजिक व्यवस्था के कारण समान में उनके निर्धारित स्थान को लेकर उठाये सवालों में जूझते सृजनात्मक साहित्य का परिचय दिया।

स्वातन्त्रता पूर्व की महिला लेखिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान, सुमित्रा कुमारी सिन्हा, चन्द्र किरण सोनरेकसा, उषा देवी मित्रा, तारा पाण्डेय, कमल चौधरी शिवरानी देवी, तेजरानी पाठक प्रमुख हैं। यह युग सामाजिक, राजनीतिक रूप से नवजागरण काल था। दहेज प्रथा, बाल–विवाह, सती प्रथा की निन्दा करते हुये विधवा विवाह को सामाजिक स्वीकृति दिलाने की कोशिश की गई। व्यक्तिगत पीड़ाओं और कुण्ठाओं तथा सामाजिक रूढ़ियों के प्रति अपना विरोध जाहिर किया गया। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'उन्मादिनी' 'बिखरे मोती' आदि कहानियाँ इसी प्रकार की है। उनकी शेत 'अचल सुहाग' और 'वर्षगाँठ' जैसी कहानियों के माध्यम से भारतीय नारी के परम्परागत रूप को नकारते हुए प्राचीन परम्परा और रूढ़ियों के जंजीरों में जकड़ी हुई स्त्रियों के मन में इनके लिए कटूता भव दी। स्त्री विमर्श के इस सन्दर्भ में निराला का यह कथन प्रांसगिक है–

''आधुनिक रचना शैली की वह पहली महिला है। रूढ़ियों की पवित्रता की चाहरर्दाकरीं के बाहर उनकी निगाह गई है। वह समय के साथ हैं। स्त्रियों के मानसिक और व्यवहारिक जीवन का उन्होंने पर्दाफाश कर दिया है, जिससे समाज की सच्ची सूरत प्रतिफलित हुई है।''

'आदमखोर' कहानी संग्रह जो चन्द्र किरण सोनसेक्स की है उसमें 'गृहस्थी का सुख', 'छलिया', 'आदमखोर' जैसी कहानियों के माध्यम से नारी जाति के शोषण और उत्पीड़न को अभिव्यक्त किया गया है। उनकी कहानियों में भारतीय दाम्पत्य जीवन की टूटती गृहस्थी के कारण नारी के कष्ट और पुरूष पर आर्थिक रूप से निर्भर रहने के कारण हर प्रकार के अन्याय सहती नारी के प्रति चिन्ता व्यक्त की है।

मन्नू भण्डारी की कहानी 'ईसा के घर इंसान' के एक अश में नौतिक धारणा के टूटते का वर्णन है जहाँ चर्च का फादर लूसी, जोली और एंजिला नामक 3 नन्स की बाहर की दुनियाँ को देखने की अदम्य इच्छा को परम्परागत नैतिक आदर्शो की रक्षा के लिए खींची गई लक्ष्मण रेखा के भीतर उनके मन को दफना देता है पर इनकी असहायता का फायदा उठाकर उनका यौन शोषण करता है। मन्नू भण्डरि ने इस कहानी के माध्यम से नारी की स्वतंत्रता की आकाक्षा तथा परम्परागत नैतिक मूल्यों के प्रति विद्रोह को प्रकट किया है।

एंजिला कहती है– ''मैं नदी रहुँगी यहाँ कभी नही रहूँगी। देखों मेरे रूप को, मैं अपनी जिन्दगी को, अपने इस रूप को चर्च की दीवारों के भीतर नष्ट नदीं होने दुँगी, मैं जिन्दा रहना चाहती हूँ। आदमी की तरह जिन्दा रहना चाहती हूँ। ..... मैं भाग जाऊँगी ..... मैं भाग जाऊँगी।''

इक्कीसवीं सदी की महिलायें केवल स्वतन्त्र व्यक्तित्व के विकास स्तर पर ही नहीं बल्कि कानूनी तथा आर्थिक रूप से भी स्कावलम्बी है, और स्वतन्त्र व्यक्तित्व की वह स्वामिनी हैं।

दाम्पत्य जीवन की ऊब से मुक्ति के लिये छटपटाती स्त्री का चित्रण मृदुला गर्ग की कहानी 'हरी बिन्दी' में स्पष्टतः परिलाक्षित होता है जहाँ नायिका पति के बाहर जाने पर इतनी खुश होती है कि उस दिन वह सब कुछ कर लेना चाहती है जो पति के रहने परन हीं कर पाती। जैसे नीलू कपड़े के साथ हरी बिन्दी लगाना, खाना न बनाना, गर्म टिकिया और गण्डी आईसक्रीम एक साथ खाना और एक अजनकी विदेशी के साथ काफ़ी हाऊस और टैक्सी में बैठना, बतियाना। वह जीवन के एक एक पल को स्वतन्त्र रूप से अपनी मर्जी के अनुसार जीना चाहती है– ''वह जीवन में पहली बार ऐसे इन्सान के साथ बैठी जो यह नहीं जानना चाहता कि उसका पति है या नहीं और है तो क्या काम करते हैं।''

सम्वन्ध विच्छेद का सबसे अधिक प्रभाव बच्चे पर पड़ता है। जिसका अत्यन्त मार्मीक चित्रण 'आपका बन्टी' में मन्नू भण्डारी ने किया है।

जहाँ वह अकेले अपने बच्चे को पालती है। लेकिन पिता का अभाव बच्चे के मन पर विपरीत प्रभाव ड़ालने लगता है। माँ, पिता का भावनात्मक संरक्षण नहीं दे सकती। इस कारण विकट अन्तर्द्धन्दों से गुजरती नायिका शकुन्तला बच्चे को पिता के पास छोड़ आती है। यह सोंचकर कि शायद मेरे द्वारा चुनी जिन्दगी और उसके लिये किये गंच संघर्ष में बच्चें के मन पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े। उसकी कोमल भावनायें, मासूमियत और पिता की स्मृति से भरा मन कहीं टूट न जाये। नायिका की द्वन्द्वात्मक स्त्रिति व संघर्ष को बड़ी ही सूक्षमता से उजागर करता है।

मन्नू भण्डारी की कहानी 'ऊँचाई' में स्त्री मन की द्वन्द्वात्मक स्थिति को अन्यन्त सूक्ष्मता के साथ उपस्थित किया गया है। जहाँ 'पर–पुरूष के स्पर्श मात्र से नारी अपवित्र हो जाती है।'' इस मिथक को तोड़ा गया है। पति को छोड़कर प्रेमी के पास गई नायिका को प्रेमी अपनाने से इन्कार कर देता है। वह पुनः अपने पति के पास लौट आती है, पर पति का नायिका शिवानी का दो पुरूषों के बीच बँटना स्वीकार नहीं है। वह शिवानी पर पूर्ण अधिकार चाहता हैं। नायिका मन से पति को चाहती है, पर प्रेमी से भी सम्बन्ध बनाये रखना चाहती है। वह कहती है– ''शरीर पर चाहे वह (अतुल) छाया हो पर मन पर कंवल तुम छाये हो किसी के कितंन ही निकट चली जाऊँ, चाहे शरीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लूँ पर मन की जिस ऊँचाई पर तुम्हें निठा रखा है वहाँ कोई नहीं आ सकता।''

आज की आधुनिक और सशक्त जागरूक लेखिका कुसुम कुमार ने अपने सशक्त नाटक 'दिल्ली ऊचा सुनती है' में सरकारी तन्त्र में आकण्ठ फैले भ्रष्टाचार को बे नकाव करती है। मंजुल भगत ने अपनी कहानियों का पात्र पुरूषों को बनाया और उसके दृष्टिकोण आदत अभिमान, कुण्ठाओं, निराशाओं के, व्यक्त किया। 'खलि तारीख', 'लंगर्ड बत्तखें', 'एक झुका हुआ आदमी' इसी तरह की कहानियाँ है। ममता कालिया, ऊषा प्रियंवदा, मालती जोशी, जैसी शसक्त महिला कथाकारों की लेखनी से प्रस्फुटित हुई थे कहानियाँ किसी को भी झकझोरने में समर्थ हैं।

एक वृद्धा, अकेली व परित्यक्ता नारी के जीवन का अत्यन्त सफल चित्रण मन्नू भण्डारी ने अपनी कहानी 'अकेली' में किया है 'सोमा बुआ बुढ़िया है। सोमा बुआ परित्यकता हैं, सोमा बुआ अकेली है। जैसे साधारण वाक्यों से प्रारम्भ हुई यह कहानी जैसे–जैसे आगे बढ़ती है अपनी कर्मस्पर्शी भावनाओं के साथ पाठक को इकझोर जाती है।

मदआ माँजी की कहानी 'सपने कभी नहीं मरते' में विकट परिस्थितियों में भी अपने सपने को जिन्दा करने के लिये दृढ़ संकल्प लिये नायिका 'मँझली' के जीवन संघर्ष को अत्यन्त जीवान्तता के साथ प्रस्तुत किया गया। एक दुर्घटना में 'मँझली' का एक हाथ और पैर कट गया है। पर वह अपनी जिन्दगी से हार नहीं मानती है, और नकली हाथ पैर की मदद से अपने सपने को साकार करती है। वह कहती है– ''मैं पुरानी बातें भूलकर नई जिन्दगी शुरू करना चाहती हूँ इस लिये मुझे सहानुभूति नहीं उत्साह और ऊनी चाहिये।'' यही विचार कई नई लोखिकाओं ने नारी संघर्ष पर व्यक्त कर अपना योगदान प्रस्तुत किये।

संदर्भ सूची

1. साठोत्तर हिन्दी लेखिकाओं की कहानीयों में नारी – डॉ. सौ. मंगल कप्पीकेरे, पृ. 22
2. ईसा के घर इन्सान – मन्नू भण्डी
3. हरी बिन्दी कहानी, मृदुला गर्ग
4. ऊँचाई कहानी – मन्नू भण्डारी
5. दिल्ली ऊँचा सुनती है – कुसुम कुमारी
6. सपने कभी नहीं मरते – मदुआ माँजी